

ऋग्वेद मण्डल १, सूक्त १, मन्त्र ६

वेदार्थ-पारिजात एवं वैज्ञानिक विश्लेषण

ऋषि विश्वामित्र विद्या फाउंडेशन | प्रस्तुतकर्ता: आचार्य कपिल (सम्पर्क: 8756390767)

१. मन्त्र एवं पदपाठ

संहिता पाठ

यद्गं दाशुषे त्वमग्ने भद्रं क रिष्यसि । तवेत्तत्सत्यमंगिरः ॥ ६ ॥

पद पाठः यत् । अङ्ग । दाशुषे । त्वम् । अग्ने । भद्रम् । करिष्यसि । तव । इत् । तत् । सत्यम् । अङ्गिरः ॥ ६ ॥

२. शब्दार्थ

पद	अर्थ
यत्	चूँकि / जो / यस्मात्
अङ्ग	हे सर्वमित्र / संबोधन वाचक निपात
दाशुषे	हविष्य देने वाले / सर्वस्व समर्पित करने वाले यजमान के लिए
त्वम्	हे परमेश्वर ! / तू
अग्ने	हे अग्ने !
भद्रम्	कल्याणकारी / सुखद वस्तु या स्थिति
करिष्यसि	करता है / करेगा
तव इत्	तेरी ही / तेरे द्वारा ही
तत्	वह (कल्याण)
सत्यम्	सत्य / निश्चित रूप से यथार्थ
अङ्गिरः	हे अङ्गिरस् ! (अंगों के रसस्वरूप / प्राणरूप अग्नि)

३. भाष्यद्वय (सायणाचार्य एवं स्वामी दयानन्द सरस्वती) का अनुवाद

सायणाचार्य का भाष्य (पारंपरिक / कर्मकाण्डीय अर्थ)

सायणाचार्य 'अङ्ग' शब्द को अभिमुखीकरण (संबोधन) का निपात मानते हैं। वे कहते हैं कि हे अग्ने! हविष्य देने वाले (दाशुषे) यजमान के लिए आप जो भी वित्त, गृह, प्रजा और पशुओं के रूप में कल्याण (भद्रम्) करते हैं, वह सब आपका ही (तवैव) किया हुआ सुख का हेतु है। हे अङ्गिरस् अग्ने! यह सत्य है, इसमें कोई संशय नहीं है कि यजमान के यज्ञ-कर्म आदि संपन्न होने पर अग्नि के माध्यम से ही उसे सुख प्राप्त होता है। (शतपथ ब्राह्मण एवं शाट्यायन ब्राह्मण के अनुसार धन, घर, संतान और पशु ही 'भद्र' हैं)।

स्वामी दयानन्द सरस्वती का भाष्य (वैदिक-आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक अर्थ)

स्वामी दयानन्द जी के अनुसार— हे मङ्गलमय परमेश्वर! (अग्ने) हे सर्वत्र व्याप्त अग्नि! आप सर्वस्व समर्पित करने वाले (दाशुषे) साधक के लिए जो भी विद्वानों द्वारा सेवनीय कल्याण (भद्रम्) करते हैं, वह सब आपके द्वारा ही किया जाता है। हे पृथिव्यादि ब्रह्मांड के अंगों और शरीर के भीतर प्राणरूप से निवास करने वाले (अङ्गिरः) अन्तर्यामी परमेश्वर! आपका वह कल्याण-विधान सर्वथा सत्य और सुख का विस्तार करने वाला है।

४. सायण भाष्य की व्याकरण प्रक्रिया (Grammar Derivation)

- **अङ्गः**: “अङ्ग इत्यभिमुखीकरणार्थो निपातः।” अभ्यादित्वात् (फि. सू. ८१) अन्तोदात्तत्वम्।
- **दाशुषे**: 'दाश दाने' धातु से क्वसु प्रत्यय होकर 'दाशान्साह्वान्' (पाणिनी सू. ६.१.१२) सूत्र से निपातित। प्रत्ययस्वर (पा. सू. ३.१.३)।
- **अग्ने**: आमन्त्रित होने के बावजूद पाठिक (पा. सू. ६.१.१९८) सूत्र से आद्युदात्तत्व।
- **भद्रम्**: 'भदि कल्याणं' धातु के ऊपर रक् प्रत्यय होने से अन्तोदात्तत्व।
- **करिष्यसि**: वाक्य में 'यत्' शब्द होने के कारण निघातो प्रतिषेध हुआ है और स्यप्रत्यय के स्वर से उपान्त्योदात्त है।
- **तव**: 'युष्मदस्मदोर्दसि' (पा. सू. ६.१.२११) से आद्युदात्तत्व।
- **अङ्गिरः**: निरुक्त (३.१७) के अनुसार "अङ्गारा अङ्गिराः"। ऐतरेय ब्राह्मण (३.३४) के अनुसार अंगारों से संबंध होने के कारण अग्नि को अङ्गिरस् कहा गया है।

५. वैज्ञानिक एवं दार्शनिक दृष्टिकोण (Scientific Approach)

इस मन्त्र का वैज्ञानिक और ऊर्जा-विज्ञान की दृष्टि से गहरा अर्थ है:

- **ऊर्जा संरक्षण और प्रतिदान (Law of Conservation & Reciprocity)**: 'दाशुषे' का अर्थ है जो प्रकृति या ऊर्जा के स्रोत (अग्नि) को अपनी आहुति (ईंधन/समर्पण) देता है। विज्ञान का नियम है कि जैसी ऊर्जा आप सिस्टम को देंगे, सिस्टम आपको उसका पुनर्भरण (कल्याण/भद्र) प्रदान करेगा।
- **प्राण और अंग-संचालन (Biophysics)**: स्वामी दयानन्द द्वारा उद्धृत शतपथ ब्राह्मण के अनुसार प्राण ही 'अङ्गिरा' है। शरीर के समस्त अंगों (Cells and Organs) में जो जैव-ऊर्जा (Bio-energy) या चयापचय (Metabolism) की अग्नि काम कर रही है, वही संपूर्ण शरीर का संचालन और पोषण करती है।
- **सत्य और प्रामाणिकता**: प्रकृति के नियम शाश्वत और अकाट्य (सत्य) हैं। यदि अग्नि (ऊर्जा) को संतुलित रूप में प्रज्वलित रखा जाए, तो जीवन और पर्यावरण का कल्याण निश्चित है।

मुख्य विचार: यह मन्त्र हमें यह सिखाता है कि प्रकृति और परमेश्वर की जिस ऊर्जा (अग्नि) की हम आराधना और सेवा करते हैं, वह हमें हमारे कर्मों के अनुसार प्रत्यक्ष कल्याण के रूप में शत-प्रतिशत प्रतिफल प्रदान करती है।

ऋषि विश्वामित्र विद्या फाउंडेशन
प्रस्तुतकर्ता: आचार्य कपिल | सम्पर्क: 8756390767